राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 28 फरवरी को क्यों

चक्रेश जैन

आज़ादी मिलने के चार दशकों बाद हमारे देश में एक नई शुरुआत हुई और पहली बार 28 फरवरी 1987 को पूरे देश में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। वास्तव में, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाने का उद्देश्य लोक जीवन में विज्ञान संचार और आम जन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास है। यह प्रश्न सहज ही उठता है कि इसके लिए 28 फरवरी की तिथि ही क्यों चुनी गई?

1982 में भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद (एनसीएसटीसी) की स्थापना की गई। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य देश में विज्ञान संचार की गतिविधियों को बढ़ावा देना था। परिषद के गठन के बाद देश में विज्ञान संचार में अनुसंधान को भी प्रोत्साहन मिला।

28 फरवरी का चयन

परिषद की स्थापना के बाद कुछ उत्साही विज्ञान प्रेमी लोगों ने इस संस्था को एक पत्र लिखा, जिसमें 'राष्ट्रीय शिक्षक दिवस' की भांति प्रति वर्ष 'राष्ट्रीय वैज्ञानिक दिवस' मनाने का सुझाव दिया गया था। परिषद ने इस पत्र का संज्ञान लेते हुए 4 और 21 नवंबर 1986 को दो बैठकें आयोजित कीं। इन बैठकों में यह सुझाव रखा गया कि 'वैज्ञानिक दिवस' मनाने की बजाय 'विज्ञान दिवस' मनाया जाए। दूसरा सुझाव यह था कि 7 नवंबर को भारतीय वैज्ञानिक सी.वी. रामन का जन्म दिन राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाया जाए। इस संदर्भ में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी का विचार था कि नवंबर पहले से ही अनेक महान वैज्ञानिकों की जयंति और विज्ञान की ऐतिहासिक घटनाओं के आयोजनों और उत्सवों से जुड़ा हुआ है, अतः 'रामन प्रभाव' की खोज की घोषणा यानी 28 फरवरी का दिन राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाने के लिए सभी तरह से उपयुक्त रहेगा।

बैठक में आम सहमति के बाद वर्ष 1987 से पूरे देश में 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाने का निर्णय लिया गया और भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग ने 28 फरवरी की तिथि राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाने के लिए निर्धारित कर दी। यह दिन चुने जाने के पीछे एक और कारण है। हमारे यहां के युवा वैज्ञानिक सी.वी.रामन के खोज कार्य से प्रेरणा लेकर मौलिक अनुसंधान को अपना कैरियर बनाएं।

सुप्रसिद्ध भारतीय भौतिकविद चन्द्रशेखर वेंकट रामन ने 28 फरवरी 1928 को कलकत्ता में इंडियन एसोसिएशन फॉर दी कल्टीवेशन ऑफ साइंस की प्रयोगशाला में 'रामन प्रभाव' की घोषणा की थी। इस खोज की घोषणा के दो वर्ष बाद यानी 1930 में सी.वी. रामन को भौतिकी के नोबेल पुरस्कार के लिए चुना गया था। वे पहले भारतीय वैज्ञानिक थे, जिन्होंने देश को विश्व प्रतिष्ठित नोबेल सम्मान दिलाया था। यह सम्मान अकेले एक भारतीय वैज्ञानिक का नहीं, पूरे भारत का सम्मान था।

विज्ञान जगत में सी.वी. रामन की पहचान एक अनुकरणीय व्यक्ति की है। सी.वी. रामन का विज्ञान अनुसंधान और विज्ञान को लोकप्रिय बनाने दोनों क्षेत्रों में विशेष योगदान रहा है। उनके शोध कार्य 'रामन प्रभाव' पर लगभग दस

हज़ार शोध पत्र प्रकाशित हो चुके हैं। इस अनुसंधान का उद्योग जगत में व्यापक उपयोग हो रहा है। रामन ने भारतीय वाद्य यत्रों की भौतिकी पर भी महत्वपूर्ण शोध कार्य किया है।

वैज्ञानिक रामन गजब के वक्ता थे। उनके व्याख्यान सुनने के लिए शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों के अलावा समाज विज्ञान, इतिहास, संगीत और कला जगत के लोग मौजूद रहते थे। ऐसा कहा जाता है कि लेक्चर हॉल में पैर रखने की जगह तक नहीं रहती थी। इतना ही नहीं, श्रोता व्याख्यान पूरा होने तक डटे रहते थे। उन्होंने रेडियो के माध्यम से विज्ञान की शोधपरक और रोचक बातें आम लोगों के बीच पहुंचाई। उनकी लगभग 19 रेडियो वार्ताएं प्रसारित हुई थीं जिन्हें बाद में '*दी न्यू फिज़िक्सः टॉक्स ऑन ऑस्पेक्ट्स ऑफ साइंस*' शीर्षक से किताब के रूप में प्रकाशित किया गया।

1987 में पहली बार पूरे देश में विज्ञान दिवस मनाया गया। वर्ष 2000 से विज्ञान दिवस मनाने के लिए एक मुख्य विषय का चयन किया जाता है। इस बार का विषय है - 'मेक इन इंडिया - एस एंड टी ड्रिवन इनोवेशन।'

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और वैज्ञानिक संस्थानों में उत्सव के रूप में मनाया जाता है। कई वैज्ञानिक संस्थान और प्रयोगशालाएं पूरे एक सप्ताह तक विज्ञान दिवस मनाते हैं और अपनी प्रयोगशालाएं आम लोगों के लिए खोल देते हैं। इस दौरान विज्ञान प्रदर्शनियों, विज्ञान मेलों, लोकप्रिय व्याख्यान, निबंध और पोस्टर प्रतियोगिताओं, परिचर्चाओं आदि का आयोजन किया जाता है। कुछ संस्थानों में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस एक दिन से लेकर एक महीने तक विज्ञान उत्सव के रूप में मनाया जाता है। विज्ञान उत्सव का शुभारंभ अथवा समापन 28 फरवरी के दिन किया जा सकता है।

हर साल संसद में बजट 28 फरवरी को प्रस्तुत किया जाता है और अधिकांश लोगों की निगाहें और जिज्ञासा बजट प्रस्तावों में रहती हैं। बजट और विज्ञान दिवस एक ही दिन होने के कारण अधिकांश लोगों को पता ही नहीं चल पाता कि देश में विज्ञान दिवस भी मनाया जाता है।

देश में राष्ट्रीय विज्ञान दिवस पिछले 28 वर्षों से लगातार मनाया जा रहा है। प्रयास तो काफी ज़ोर-शोर से और शिद्दत से हुए हैं मगर यह अनुसंधान का विषय होना चाहिए कि क्या इससे लोगों में वैज्ञानिक जागरूकता बढ़ी है। इतना स्पष्ट है कि विज्ञान को लोकप्रिय बनाने की एक छोटी-सी लकीर 1987 में खींची गई थी, जो निरंतर लंबी होती जा रही है। ***(स्रोत फीचर्स)***

इस अंक के चित्र निम्नलिखित स्थानों से लिए गए हैं -
page 03 - http://evolution.unibas.ch/salzburger/team/dberner/img/sticklebacks.jpg
page 03 - https://s-media-cache-ak0.pinimg.com/736x/6c/68/69/6c68694e8e314408edc70bb85b9d8883.jpg
page 04 - http://3.bp.blogspot.com/-zpLGUNnSgnY/UPmhjh45uzI/AAAAAAAAAJs/oMuyPd4c0bs/s1600/tsetse.jpg
page 05 - http://www.monitor.co.ug/image/view/-/833370/highRes/122802/-/maxw/600/-/iis9li/-/helath002px.jpg
page 07 - http://www.nature.com/polopoly_fs/7.16191.1395080092!/image/ripple-effect.jpg_gen/derivatives/fullsize/ripple-effect.jpg
page 20 - https://edc2.healthtap.com/ht-staging/user_answer/avatars/853823/large/open-uri20130211-30229-w13c3j.jpeg?1386608633
page 24 - https://www.sciencenews.org/sites/default/files/main/articles/120315_ti_geneediting_free.jpg
page 27 - http://www.periodictable.com/Samples/078.16/s13.JPG
page 28 - http://www.callagold.com/all-about-rings/white-gold-vs-platinum-wedding-rings/
page 29 - http://www.natureasia.com/en/nindia/article/10.1038/nindia.2016.23
page 31 - http://i.dailymail.co.uk/i/pix/2016/02/25/11/318B85DD00000578-3463588-The_worm_is_found_in_shallow_water_on_sand_beaches_at_certain_si-a-39_1456398942988.jpg